20वें विश्व शांति महासम्मेलन(20th World PeaceCongress) नई दिल्ली में माननीय राज्यपाल महोदय का उद्‌बोधन

(दिनांक 30 दिसम्बर, 2024)

जय हिन्द, नमस्कार!

आज हम 20वें विश्व शांति महासम्मेलन के उद्‌घाटन के शुभ अवसर पर यहां उपस्थित हुए हैं,यह हमारे लिए अत्यंत गर्व और सम्मान का क्षण है। नई दिल्ली की पवित्र भूमि पर इस आयोजन का साक्षी बनना, एक ऐतिहासिक अवसर है। मैं अंतर्राष्ट्रीय विश्व शांति प्रबोधक महासंघ और इसके सहयोगियों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस महत्वपूर्ण आयोजन को संभव बनाया। यह मंच, जो संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक परिषद से संबद्ध है, शांति और मानवता के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है।

साथियों,

मैं उत्तराखण्ड से आप सबके मध्य आया हूँ, इसलिए मैं हमारे राज्य का विशेष उल्लेख करना चाहता हूँ। उत्तराखण्ड, जिसे देवभूमि के नाम से जाना जाता है, न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए विख्यात है, बल्कि इसकी आध्यात्मिक धरोहर और शांति का संदेश भी इसे विशिष्ट बनाता है। इस राज्य के शांत वातावरण, हिमालय की गोद में बसे योग और ध्यान केंद्र, और प्राचीन धार्मिक स्थल न केवल भारतीय संस्कृति को समृद्ध करते हैं, बल्कि विश्व भर से आने वाले लोगों को आत्मिक शांति प्रदान करते हैं।

उत्तराखण्ड के ऋषिकेश और हरिद्वार जैसे स्थल योग और ध्यान के वैश्विक केंद्र बन चुके हैं। यहां आने वाले लोग न केवल शरीर और मन को शांत करते हैं, बल्कि आत्मा की गहराइयों को भी समझने का प्रयास करते हैं।आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में उत्तराखण्ड का योगदान उल्लेखनीय है। यह राज्य उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो अपने जीवन में शांति और स्वास्थ्य का संतुलन स्थापित करना चाहते हैं। उत्तराखण्ड का प्राकृतिक सौंदर्य और इसकी जैव विविधता भी शांति के अनुभव को और गहरा बनाती है। यहां की नदियाँ, झीलें, और पर्वत हर आगंतुक को एक नई ऊर्जा और ताजगी का एहसास कराते हैं। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्तराखण्ड ने अनेक पहलें की हैं, जो न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक मिसाल हैं। हिमालय के संरक्षण से लेकर नदियों के पुनर्जीवन तक, यह राज्य पर्यावरणीय स्थिरता का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

साथियों,

शांति का विचार केवल एक आदर्श नहीं है, बल्कि यह हमारे अस्तित्व और विकास की आधारशिला है। शांति का मतलब केवल युद्ध और हिंसा का अभाव ही नहीं है बल्कि शांति वह अवस्था है, जिसमें हर व्यक्ति स्वतंत्रता, समानता और गरिमा के साथ जीवन जी सकता है। यह वह बंधन है जो हमें एक–दूसरे से जोड़ता है और मानवता को एक परिवार के रूप में सशक्त बनाता है। आज जब दुनिया

अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रही है, तब शांति की आवश्यकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

साथियों,

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने वैश्विक मंच पर शांति के प्रयासों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। उनकी ''वसुधैव कुटुंबकम'' की विचारधारा ने पूरे विश्व को यह संदेश दिया है कि यह धरती एक परिवार है और हमें एकजुट होकर मानवता की भलाई के लिए काम करना चाहिए। प्रधानमंत्री जी का यह दृष्टिकोण हमें विश्व शांति और स्थिरता के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। उनकी पहल, जैसे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, ने दुनिया को शांति, ध्यान और आंतरिक संतुलन का महत्व समझाया है।

आज, जब दुनिया युद्ध, हिंसा, और अस्थिरता से जूझ रही है, ऐसे समय में भारत शांति के लिए एक मिसाल प्रस्तुत करता है। हमारे देश ने हमेशा से विवादों को संवाद और अहिंसा के माध्यम से हल करने का प्रयास किया है। यह महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी के विचारों का अनुसरण है, जिन्होंने शांति, अहिंसा और सत्य के मार्ग को अपनाने का संदेश दिया। महात्मा गांधी का सत्याग्रह न केवल भारत की स्वतंत्रता का आधार बना, बल्कि यह पूरी दुनिया में शांतिपूर्ण आंदोलन का प्रतीक भी बना।

भारत का यह दृष्टिकोण केवल ऐतिहासिक नहीं है, बल्कि वर्तमान में भी प्रासंगिक है। चाहे संयुक्त राष्ट्र में हमारी भूमिका हो, या पर्यावरण संरक्षण के लिए हमारी प्रतिबद्धता, भारत ने हमेशा एक शांतिपूर्ण और स्थिर विश्व व्यवस्था के निर्माण का समर्थन किया है।

आज की दुनिया में आतंकवाद, हिंसा, जलवायु परिवर्तन, सांस्कृतिक और धार्मिक विभाजन, और आर्थिक असमानता जैसी समस्याएं शांति के मार्ग में सबसे बड़े अवरोधक हैं। आतंकवाद और हिंसा न केवल निर्दोष जीवन को छीन लेते हैं, बल्कि समाज की नींव को भी कमजोर करते हैं। जलवायु परिवर्तन हमारे ग्रह के अस्तित्व को खतरे में डाल रहा है। सांस्कृतिक और धार्मिक विभाजन समाज में भेदभाव और असमानता को बढ़ावा देते हैं। आर्थिक असमानता, जो धन और संसाधनों के असमान वितरण का परिणाम है, वह भी शांति के प्रयासों में बड़ी बाधा है। इन सभी समस्याओं का समाधान केवल एकजुटता, संवाद और आपसी समझ के माध्यम से ही संभव है।

साथियों,

शांति की पहली पाठशाला हमारा घर और विद्यालय है। शिक्षा न केवल ज्ञान का स्रोत है, बल्कि यह हमारे सोचने के तरीके और दृष्टिकोण को भी आकार देती है। एक समावेशी और सशक्त शिक्षा प्रणाली ही वह माध्यम है जिससे हम सहिष्णुता, करुणा और वैश्विक नागरिकता के गुणों को विकसित कर सकते हैं। हमें शांति शिक्षा को

स्कूलों और विश्वविद्यालयों में अनिवार्य बनाना चाहिए। यह शिक्षा बच्चों और युवाओं को सिखाएगी कि शांति और मानवता के मूल्य केवल आदर्श नहीं हैं, बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं।

हमें यह भी समझना होगा कि संवाद और सहयोग शांति की प्रक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण तत्व हैं। संवाद हमारे बीच की दूरी को कम करता है और आपसी विश्वास को बढ़ावा देता है। यह मतभेदों को सुलझाने का सबसे प्रभावी तरीका है। हमें विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और विचारधाराओं का सम्मान करना सीखना होगा। सांस्कृतिक विविधता हमारी ताकत है और यह हमें एकजुट रहने की प्रेरणा देती है।

भारत की संस्कृति और परंपराएं हमें शांति और मानवता का संदेश देती हैं। हमारे महापुरुषों ने हमें यह सिखाया है कि अहिंसा और सत्याग्रह जैसे मूल्य ही हमारी असली ताकत हैं। महात्मा गांधी का जीवन और उनके विचार आज भी पूरे विश्व को प्रेरणा देते हैं। ''वसुधैव कुटुंबकम'' का हमारा आदर्श पूरी दुनिया को एक परिवार मानता है। यह विचार हमें सिखाता है कि शांति केवल हमारा लक्ष्य नहीं, बल्कि हमारा जीवन मार्ग भी है।

इस महासम्मेलन का आयोजन इस बात का प्रतीक है कि भारत शांति और मानवता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को लेकर पूरी तरह गंभीर है। यह सम्मेलन विभिन्न देशों के विचारकों, शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं को एक साथ लाने

का प्रयास करता है ताकि संवाद और सहयोग के नए रास्ते खोले जा सकें। इस सम्मेलन से हमें न केवल शांति स्थापना के लिए नए विचार मिलेंगे, बल्कि इसे व्यवहार में लाने की प्रेरणा भी मिलेगी।

साथियों,

शांति की प्रक्रिया में पर्यावरणीय स्थिरता का भी अत्यधिक महत्व है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और उनके उपयोग में संतुलन बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है। जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को रोकने के लिए हमें सामूहिक प्रयास करने होंगे। हमें यह समझना होगा कि हमारे द्वारा उठाए गए छोटे–छोटे कदम, जैसे ऊर्जा की बचत, Green Technology को अपनाना, और वृक्षारोपण, दीर्घकालिक शांति और संतुलन को सुनिश्चित करेंगे।

सांस्कृतिक समावेशिता और समानता के बिना कोई भी शांति प्रयास सफल नहीं हो सकता। विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का आदान–प्रदान न केवल हमारी सोच को व्यापक बनाता है, बल्कि यह हमें एक–दूसरे के करीब भी लाता है। हमें अपनी अगली पीढ़ी को यह सिखाना चाहिए कि विविधता में हमारी ताकत है। यह शांति का एक मजबूत आधार बनाता है, जो आने वाले समय में समाज को स्थायित्व और विकास प्रदान करेगा।

शांति का यह संदेश केवल देशों की सीमाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए। इसे वैश्विक स्तर पर फैलाने की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र जैसे मंच हमें यह अवसर प्रदान करते हैं कि हम एक वैश्विक समाज का निर्माण करें, जहां हर व्यक्ति को समान अधिकार और अवसर मिले। यह शांति का एक ऐसा मॉडल होगा, जिसे हम सभी अपनाने और आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित होंगे।

साथियों,

मैं इस अवसर पर "United for Peace: A Shared Vision for Humanity"नामक पुस्तक के विमोचन के लिए आयोजकों को बधाई देता हूँ। यह पुस्तक हमें शांति और मानवता की दिशा में प्रेरित करेगी। इस सम्मेलन में जो विचार और दृष्टिकोण साझा किए जाएंगे, वे हमें एक नए भविष्य की ओर ले जाएंगे।

अंत में, मैं इस सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए आयोजकों को धन्यवाद देता हूँ। आप सभी प्रतिभागियों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जो इस महत्त्वपूर्ण प्रयास का हिस्सा बने। आइए, हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि शांति केवल हमारा सपना नहीं, बल्कि हमारी वास्तविकता होगी। हम सब मिलकर एक ऐसा विश्व बनाएंगे जहां हर व्यक्ति स्वतंत्रता, समानता और गरिमा के साथ जी सके।

धन्यवाद।

जय
हिन्द!